ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 169-171

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

अमिता मिश्रा E-mail: mishraamita.edu@gmail-com

Received- 12.02.2021, Revised- 17.02.2021, Accepted - 20.02.2021

सारांश : ***आज विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित बच्चों के लिए विज्ञान विषय की शिक्षा के लिए प्रायः शिक्षकों एवं शिक्षण अधिगम का अभाव है। अधिकांशतः विद्यार्थियों की अभिरुचि विज्ञान विषय को पढ़ने की ओर कम होती है दृष्टिबाधित बच्चों की इस प्रवृत्ति को देखते हुए उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्रस्तुत शोध की आवश्यकता महसूस हुई।***

इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हो सकेगा कि उच्च प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित बच्चों का झुकाव विज्ञान विषय की ओर कितना है। उन पर विज्ञान विषय का कितना प्रभाव पड़ता है। तथा उनके सर्वांगीण विकास में इस विषय की उपादेयता क्या है। दृष्टिबाधित बच्चे भी अन्य बच्चों की तरह ही ईश्वर की अनमोल कृति हैं। इनमें वे सभी गुण विद्यमान होते हैं जो एक सामान्य बच्चे में रहते हैं। दृष्टिबाधित एवं सामान्य बच्चों में किसी न किसी रूप में संतुलन अवश्य रहता है प्रत्येक प्राणी में कोई ना कोई कमी अवश्य रहती है लेकिन उसके दूसरे गुण प्रतिभाओं तथा अर्जित सफलताओं के सामने हम इनकी कमियों को कोई महत्व नहीं देते ।

वर्तमान एवं भूतकाल के प्रमाणों एवं महापुरुषों के द्वारा यह स्वयं सिद्ध है कि यदि किसी एक क्षेत्र में वह कमजोर है तो निश्चित रूप से किसी न किसी अन्य में सार्थक रूप से बहुत आगे भी है। दृष्टिबाधित बच्चों के प्रति समाज की उपेक्षा एवं पूर्वाग्रह के परिणामस्वरुप दृष्टिबाधित में सामाजिक असमर्थता का . ष्टिकोण उत्पन्न होता है।

कुंजीभूत शब्द– समकालीन शिक्षा, संकीर्ण, सामाजिक या आर्थिक कारण।

एक असहाय और लाचार व्यक्ति के रूप में घोषित होने के कारण व्यक्ति अपने गुण एवं व्यक्तित्व के प्रति स्वयं नकारात्मक दृष्टि से सोचने लगता है।

संपूर्ण मानव जाति को शिक्षा की पहली आवश्यकता है शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से भारत वर्ष में 1986 में नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति अपनाई गई। इसके अंतर्गत दृष्टिबाधित शिक्षण समाज कल्याण मंत्रालय से बाहर होकर शिक्षा तथा मानव विकास मंत्रालय परिवर्तित नाम शिक्षा मंत्रालय के अधीन आ गया है। संविधान के अनुच्छेद 45 में वर्णित 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा देने का प्रावधान है। परंतु कठिन प्रयासों के बाद भी 6 से 11 वर्ष के 86% और 11–14 वर्ष के शत–प्रतिशत पालन संभव नहीं हो सका, सर्व शिक्षा अभियान (2001–2010) के तहत सभी प्रकार के बच्चों को गुणवत्ता परक शिक्षा प्रदान करने हेतु सरकार प्रयासरत है।

विज्ञान का महत्व– शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान का अत्यधिक महत्व है। आधुनिक युग में सभ्यता का आधार विज्ञान को ही माना जाता है मातृभाषा के अतिरिक्त ऐसा कोई विषय नहीं है जो दैनिक जीवन में इतना अधिकसमन्वित है। विज्ञान का दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण उपयोग होता है विज्ञान का जनक गणित को माना जाता है।

वर्तमान समय में विज्ञान को विद्यालय पाठ्य विषयों में विशेष स्थान दिया गया है इसका प्रमुख कारण है कि विज्ञान द्वारा विद्यार्थियों को अपनी जीविका कमाने योग्य बनाने के साथ ही उसके ज्ञान में वृद्धि होती है। जैसे– मोमबत्ती, मिट्टी के बर्तन एवं खिलौने बनाना आदि। विज्ञान विद्यार्थियों के जीवन में विभिन्न प्रकार के कार्यों को सीखने एवं करने में सहायता प्रदान करती हैं यह विद्यार्थियों का मानसिक विकास करके उनकी बुद्धि को प्रखर बनाता है।

शोध की आवश्यकता– जैसा कि आरंभ में ही हमने चर्चा किया कि हमारे विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित बालक एवं बालिकाओं के लिए विज्ञान विषय की शिक्षा देने के लिए प्रायः शिक्षकों एवं शिक्षण अधिगम का अभाव है। अधिकांश बच्चों की अभिरुचि विज्ञान विषय को पढ़ने की ओर कम होती है विद्यार्थियों की रुचि संगीत या अन्य विषय को सुनने समझने की ओर अधिक रहती है दृष्टिबाधित बालक एवं बालिकाओं की इस प्रवृत्ति को देखते हुए प्रस्तुत शोध की आवश्यकता महसूस हुई।

शोध के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है।

शोध की परिकल्पनाएं–

1. हिंदी माध्यम के दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. अंग्रेजी माध्यम के .ष्टिबाधित छात्र–छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के .ष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति में कोई

असिस्टेंट प्रोफेसर विशेष शिक्षा दृष्टिबाधितार्थ विभाग, ज० रा० दि० वि० चित्रकूट (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध हेतु विवरणात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है

निदर्श– प्रस्तुत शोध हेतु दिल्ली शहर में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत हिंदी माध्यम के 50 दृष्टिबाधित छात्र–छात्राओं तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत 50 दृष्टिबाधित छात्र–छात्राओं का चयन संभाव्य प्रतिचयन के या.च्छिक विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण– प्रतिदर्श से आंकड़ों की प्राप्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है प्रश्नावली की विश्वसनीयता गुणांक पुनः परीक्षण विधि द्वारा 0.87 एवं अर्द्ध विच्छेदन विधि द्वारा 0.83 तथा वैधता गुणांक परीक्षण से मापने पर उच्च स्तर की वैधता प्राप्त हुई।

विश्लेषण एवं व्याख्या– संग्रहित आंकड़ें के विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन मानक त्रुटि मुक्तांश टी परीक्षण को सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में प्रयुक्त किया गया है

सारणी क्रमांक 1
हिंदी माध्यम में अध्ययनरत दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की रुचि का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी अनुपात का विवरण

समूह	स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्राएं	हिंदी माध्यम	25	77	4.89	1.51	2.64	.05
छात्र	हिंदी माध्यम	25	81	5.60			

टी अनुपात की गणना करने के पश्चात टी अनुपात का मान 2. 64 प्राप्त हुआ जो मुक्तांश 48 DF ज 05=2.01 के मान से अधिक है तथा f01=2.68 मान से कम है अतः शून्य परिकल्पना.01 हिंदी माध्यम के दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति अभिरुचि में अंतर नहीं है। 05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है क्योंकि 05 स्तर पर हिंदी माध्यम के दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति अभिरुचि में सार्थक अंतर है। इसका मुख्य कारण हिंदी माध्यम में उपयुक्त संसाधनों की कमी एवं लिंग भेद के आधार पर भारी असमानता का होना है।

सारणी क्रमांक 2
अंग्रेजी माध्यम के दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की अभिरुचि का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी अनुपात

समूह	स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्राएं	अंग्रेजी माध्यम	25	78.40	5.48	1.5	1.43	असार्थक
छात्र	हिंदी माध्यम	25	76.20	5.22			

सारिणी 02 से स्पष्ट है कि टी अनुपात का मान 1.43 प्राप्त हुआ जो मुक्तांश 48 df पर टी परीक्षण की तालिका मान f 05 से अधिक है तथा टी 01–2.68ज मान से कम है अतः हमारी शून्य परिकल्पना 02 अंग्रेजी माध्यम के दृष्टिबाधित छात्र छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है, पूरी तरह से स्वीकृत की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि अंग्रेजी माध्यम के दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति रुचि में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी 3
हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की अभिरुचि का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी अनुपात

समूह	स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
विद्यार्थी	हिंदी माध्यम	25	76.60	5.25	1.47	0.75	असार्थक
विद्यार्थी	अंग्रेजी माध्यम	25	77.40	5.45			

सारिणी 03 से स्पष्ट है कि ज–अनुपात का मान 0.75 प्राप्त हुआ जो मुक्तांश 98 df पर t.05–1. 98 तथा 1.01=2.68ज सारिणी से कम है अत शून्य परिकल्पना 03 हिंदी माध्यम के दृष्टिबाधित विधार्थियों एंव अंग्रेजी माध्यम के दृष्टिबाधित विधार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है ।

अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी माध्यम के दृष्टिबाधित विधार्थियों एंव अंग्रेजी माध्यम के दृष्टिबाधित विधार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति रूचि में सार्थक अन्तर नहीं है ।

सारिणी क्रमांक 04
उच्चतर प्राथमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रुचियों का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि तथा टी अनुपात

समूह	स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्राएं	उच्च प्राथमिक स्तर	25	77.40	5.60	1.06	0.75	असार्थक
छात्र	उच्च प्राथमिक स्तर	25	76.60	5.05			

सारिणी 04 से स्पष्ट है कि ज अनुपात का मान 0.75 प्राप्त हुआ जो मुक्तांश 98 df पर t .05= 1.98 तथा t.01= 2.68ज सारिणी मान से कम है। अत शून्य परिकल्पना 04 उच्च प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित छात्र एंव छात्राओं की विज्ञान विषय के प्रति सार्थक अन्तर नहीं है, पूर्णत स्वीकृत की जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के दृष्टिबाधित छात्र एंव छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

निष्कर्ष– विज्ञान विषय के प्रति विधार्थियों की रूचि की प्रतिशत गणना के आधार पर प्रत्येक प्रश्नों का विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि दृष्टिबाधित छात्र एवं छात्राओं की रुचियां विज्ञान विषय के प्रति समान रूप से अधिक हैं 92% विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के प्रति रुचि है जबकि मात्र 8% विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के प्रति रुचि नहीं है इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति रुचि है।

शैक्षिक निहितार्थ– विभिन्न परिकल्पनाओं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

का सांख्यिकी अध्ययन करने के पश्चात यह देखा गया है कि विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति रुचि है अतः यह आवश्यक है कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की रुचि एवं रुझानों के अनुसार उन्हें शिक्षा प्रदान करनी चाहिए बिना वर्ग भेद या लिंग भेद के विज्ञान विषय की शिक्षा प्रत्येक स्तर पर देनी चाहिए। यदि विज्ञान विषय की शिक्षा दृष्टिबाधित छात्र छात्राओं को उच्च प्राथमिक स्तर तथा माध्यमिक स्तर के आगे भी प्रदान की जाए तो उनमें सृजनात्मक तार्किक क्षमता का विकास होगा ।

हिंदी माध्यम के दृष्टिहीन विद्यालयों में अभी विज्ञान विषय के उपयुक्त शिक्षण अधिगम हेतु संसाधनों की कमी है जबकि हिंदी माध्यम के .ष्टिबाधित छात्र–छात्राओं में विज्ञान विषय के प्रति रुचि है। अतः दृष्टिहीन बालक एवं बालिकाओं हेतु अंग्रेजी एवं हिंदी माध्यम दोनों प्रकार के विद्यालयों में समान रूप से विज्ञान शिक्षण हेतु उचित शिक्षण अधिगम सामग्री की व्यवस्था की जानी चाहिए। विज्ञान विषय के अध्यापन से दृष्टिबाधित विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर ऊंचा उठाया जा सकता है तथा उनके ज्ञान को जीवन उपयोगी एवं समाज उपयोगी बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए. आई. सी. बी. दृष्टिबाधा शिक्षण, ऑल इंडिया कन्फेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड, रोहिणी नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 333–336.
2. मिश्र विनोद कुमार, (2003) विकलांगों के अधिकार, अजीत प्रिंटर्स, नई दिल्ली।
3. उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालयः समकालीन भारत एवं शिक्षा, शिक्षक शिक्षा विभाग शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखंड मुक्त विश्वविदयालय हन्दवानी, पृष्ठ संख्या, 173–74, 201.
4. कपिल एचकेः अनुसंधान विधियां, आगरा, भार्गव पुस्तक प्रकाशन, 2006.
5. सुलेमान मोहम्मदः मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, पटना ,जनरल बुक एजेंसी, 2005.06.

*****